Learning to Read by reading
पढ़ते हुए पढ़ना सीखना

बच्चे को ''पढ़ना सीखो'' के क्रम में हम ये कब कहेंगे कि बच्चे ने अब पढ़ना शुरू कर दिया है। बच्चे के औपचारिक तौर से पढ़ना शुरू करने से पहले, क्या हम ये ढूंढ सकते है कि पढ़ने की प्रक्रिया वास्तव में शुरू कहाँ से हुई।

हमसे पहले मैंने और कही ये तर्क दिया है कि (Smith 1972-73) बच्चे पढ़ते हुए पढ़ना सीखते है और किसी भी शिक्षिका के लिए ये सर्वप्रथम ज़रूरी होना चाहिए कि बच्चे को पढ़ के सुनना तब तक ज़रूरी है, जब तक वह पढ़ने की प्रक्रिया खुद से शुरू कर दें। इस विचार पर कभी–कभी आपत्ति बताई गई है कि बच्चे जब तक पढ़ने की मूलभूत प्रक्रियाओं में निपुण न हो जाए। यहां मूलभूत प्रक्रियाओं से अभिप्राय अक्षरों की ध्वनि पहचानने से है। कभी–कभी इस बात पर भी आपत्ति व्यक्त की गई है कि पढ़ने को लेकर किसी भी अर्थपूर्ण प्रस्ताव को तब तक इंतजार करना चाहिए जब तक बच्चा कुछ शब्दों को इकट्ठा रखकर एक अर्थ पूर्ण वाक्य पढ़ना शुरू न कर दें। और कुछ शिक्षकों और सिद्धान्तकारों का यह भी मानना था कि जिसकी पढ़ना सीखने की शुरूआत आसान होती है उस बच्चे के मंदबुद्धि और अल्प विकास होने की संभावनाएं बढ़ जाती है।

कुछ समय पहले मुझे इन सब मुद्दों पर एक समझ बनाने को मिली। मैंने एक कार्यक्रम में भाग लिया जिसका विषय था ''पढ़ने का निर्देश''। पियाज़े की शैक्षणिक अनुसंधान की प्रकृति है और बच्चों पर फिल्म बनाते वक्त ऐसा होता ही है, कि सबसे ज़्यादा जानकारी देने वाली घटनाएं तब होती है जब आपका पात्र कुछ ऐसी गतिविधियां कर रहा/रही हों। जिसके बारे में आपने सोचा भी नहीं था और जो शायद आपके काम के लिए बेमतलब हो। और कुछ घटनाएं तब भी होती है जब आपका कैमरा उसे रिकार्ड न कर रहा हो तो जरूरी है कि उस कोई लिखित में रिकार्ड कर रहा हो क्योंकि शोध सिर्फ तीन ही घंटे के अवलोकन पर आधारित थी, बहुत व्यापक निष्कर्ष निकालना लापरवाही होगा। इसके बावजूद जो परिणाम सामने

आए वे ऐसे थे कि जैसे किसी औपचारिक शोध के ही हो। इसलिए मेरे अनुसार इन पर विचार करना बहुत जरूरी हो गया है।

केस स्टडी

उद्देश्य बहुत ही स्पष्ट है। मुझे पढ़ना सीखने की दहलीज़ पर खड़े एक बच्चे को एक सुपर बाजार और एक डिपार्टमेन्ट स्टोर ले जाकर यह प्रमाणित करने – (1) कि बच्चों के आसपास की दुनिया में बहुत सारी अर्थपूर्ण लिखाई मौजूद है। (2) कि न सिर्फ बच्चे सीखना जानते है, बल्कि एक परिस्थिति में सीखने की संभावना खत्म हो जाने पर, वे सीखने के और भी स्रोत खोज लेते है।

शोध का विषय था 3½ साल का मैथ्यू। वे टोरेन्टो के मध्य श्रेणी के एक परिवार में दो में से एक बड़ा बच्चा है। पर उसकी स्वाभाविक जिज्ञासा और सीखने की क्षमता उसकी उम्र के बाकी बच्चों से (चाहे उनका लिंग या पारिवारिक परिस्थितियां जैसी भी हो) कोई बहुत भिन्न नहीं थी। मैथ्यू के माँ–बाप नौकरीपेशा थे तो शायद वह बाकी बच्चों से ज़्यादा टी.वी. देखता होगा। वो बहुत गहन पढ़ाई नहीं करता किताबों में उसकी रूची केवल उनमें चित्र देखने तक या किसी और द्वारा उसे पढ़े जाने पर सुनने तक ही सीमित थी।

मेथ्यू के परिवेश में लिखित भाषा की व्यापकता दिखाने के लिए हम उसे सुपर बाजार में आजादी से घुमने के लिए छोड़ देते है। कैमरा उसकी नज़र के स्तर पर उसका पीछा कर रहा है। इस दृष्टिकोण से यह साफ–साफ देखा जा सकता है कि मैथ्यू चारो तरफ से लिखाई से गिरा हुआ है। जो वास्तव में (Metaphorically नहीं) उसके सर के ऊपर थे! उसके इर्द–गिर्द हर तरफ शब्द थे, हालांकि वे शब्द की पहचान न कर पाए, पर वे सब शब्द सार्थक थे। उसको मालूम था कि सब शब्दों का कुछ न कुछ मतलब जरूर है, और वह चटनी की एक ब्राण्ड को दूसरी से भिन्न उनके लेबल पर लिखे नाम से कर पा रहा था। मेथ्यू ने यह सब कहाँ से सीखा? शायद टी.वी. में दिखाये जाने वाले इस्तेहारों से, जो कि जानकारी पढ़ने का एक प्रमुख माध्यम है (टोरी 1970) क्योंकि इस्तेहार बारम्बार शब्दों को लिखित और मौखिक रूप से, व अर्थपूर्ण संदर्भ में प्रस्तुत करते है।

शब्दों का जिस मात्रा में लिखित भाषा से साक्षात्कार होता है, यह किसी व्यस्क को आश्चर्यचकित कर सकता है क्योंकि वयस्क इस पर इतना ध्यान नहीं देते। वहीं जहां वयस्क पाठक इतनी सारी लिखाई को नज़रअंदाज कर देते है, पढ़ना सीख रहे बच्चे के लिए वहीं बहुत ही प्रेरणात्मक परिस्थिति है। इससे यह समझ आता है कि सार्थक लिखित भाषा के माध्यम से बच्चे का संसार उतना ही समृद्ध हो सकता है जितना की घर में बोली जाने वाली भाषा से, जो बोलना सीखने के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

देखकर पढ़ते समय कुछ ऐसे शब्द और संख्याएं थी जिन्हें मेथ्यू ने गलत पढ़ा। जैसे कि एक पैकेट पर लिखा उसका ब्रेण्ड का नाम कोर्नफ्लेक्स लिखा था। पर वह इस बात से अच्छे से परिचित था कि पैकेट के लेबल पर क्या छपा होना चाहिए, जो यह दर्शाता है कि उसे लेख के उद्देश्य का बोध था और यह चाहे यह शब्द की पहचान न भी कर पाएं, उसे उसका तात्पर्य ज्ञात था।

यह तो निश्चित है कि मैथ्यू कहीं ऐसे शब्द नहीं पहचान सका जिनकी केवल ध्वनि से वह परिचित था। जब उससे पुछा गया कि उसने किस बिना पर STOP यानि 'रूकिए' के चिह्न को पहचाना, तो उसका जवाब था– क्योंकि वहां लिखा था ''P-O-T-S'' (तो क्या मेथ्यू को अक्षर पलट कर पढ़ने की समस्या थी?) जब उससे पूछा गया कि गली में लगे एक नाम चिह्न पर क्या लिखा है, तो उसने अपनी गली का नाम बताया जो कि बिल्कुल भी दिखाए गए नाम के नज़दीक नही था। इसका आशय क्या यह है कि मैथ्यू को पढ़ने का कोई ज्ञान नही या फिर इससे यह स्पष्ट होता है कि बहुत ही जल्द वह एक शब्द को बाकीयों से भिन्न बताने वाले संकेतों को भांपने लगेगा, खासतौर पर तब जब उसने यह जान लिया है कि एक शब्द के कई विकल्प हो सकते है।

मेथ्यू को एक ग्रिटिंग कार्ड खरीदने के मकसद से डिपार्टमेन्ट स्टोर लाया गया। जब उससे पूछा गया कि स्टोर के उस हिस्से के ऊपर संकेत पर क्या लिखा था, तो वह बोला, ''कार्ड्स'' क्या यह बेईमानी थी, या वह 'पढ़ने' के अहम पहलू को प्रदर्शित कर रहा था जिसके अनुसार वह बिना संदर्भ के सही उत्तर देने में असमर्थ रहता? इसी प्रकार से सौ प्रतिशत सामर्थय उसमें खिलोनों वाले हिस्से के संकेत की

पहचान करके प्रदर्शित किया। और हालांकि उसको अक्षर पढ़कर बताने में कोई रूचि न थी, फिर भी उसे इस प्रक्रिया में बहुत मज़ा आया। क्योंकि अक्षरों को तो वह जानता था इसलिए वह तो 'बोरिंग' थे।

सामान (लग्गेज) वाले हिस्से में एक पर्दानशी करने वाली चूक हो गई (गुडमेन 1969)। मेथ्यू ने अपने आस–पास देखा और कहा कि संकेत पर लिखा है 'केसेज'। क्या वह कोई बेहतर जवाब दे पाता यदि वह शब्द को उसकी ध्वनि के बिना पर समझने की कोशिश करता? इस सवाल का संभव उत्तर तब मिला जब उसे जूते चप्पलों के हिस्सों में परखा गया। इस दफा कैमरा भी चालू था। शायद उसे मालूम था कि स्थिति गम्भिर है, तो उसने दोनों ही तरीके आजमाये– अक्षर दर अक्षर ही पढ़ा और संकेत का संदर्भ भी, और वह बोला, ''या तो यहां लिखा है eff-off या फिर शूज''।

अब तक का सार यही है कि मेथ्यू ने दोनों ही बिन्दू प्रमाणित कर दिए जो हम देखना चाहते थे। एक छोटे बच्चे को लिखित भाषा में यूं व्यस्त किया जा सकता है, कि हमारा विषय चाहें एक ही था, उसको भी इससे अर्थात् निकालना आता था। उसको सीखना भी आता था– किसी ने उसे संदर्भ को समझ, शब्दों की पहचान करने का प्रशिक्षण नहीं दिया था। इस बात पर निश्चित तौर पर गौर किया जाना चाहिए कि जब मैथ्यू अगर डिपार्टमेन्ट स्टोर में इतना कुछ सीख पाया तो बाकि की दुनिया से और बच्चे क्या नहीं सीख पाएंगे! वह ढांचे से परिचित था, वह जानता था किधर जाया जा सकता है और कहां नहीं, सामान किस तरह सुज्जित है, कि हर सामान की कीमत अदा करनी पड़ती है, किमत कहां और कैसे अदा करें, और खुल्ले पैसे न भूल जाए आदि। बच्चे का मार्गदर्शन और निर्देश देते हुए वयस्क के बराबर ही है उसकी जानकारी। जो मैथ्यू पर नजर रखे हुए थे उन्होंने अभी वो सबक और सीखने थे। दोनों उन्हीं परिस्थितियों से संबंध रखते जहां मैथ्यू जानबूझकर गडबडी कर रहा हो सकता है। वह पैसा नहीं करता जैसाकि हम चाहते, पर उसका व्यवहार बहुत कुछ व्यक्त कर जाता।

एक अवसर था जब मैथ्यू जो किताब कुछ मिनट पहले बहुत एकाग्रता से टटोल रहा था उसे अवरूचि से एक तरफ फैंक दिया। हमने मान लिया कि ऐसी

क्रिया से यह प्रदर्शित होता है कि बच्चे वहां रूचि नहीं दिखाएंगे, जहां कुछ सीखने के लिए न हो; उसने जान लिया कि उस किताब से उसे जो कुछ सीखना था सीख लिया। पर जब हमने एक दफा फिर फिल्मिंग चालू करी, मैथ्यू ने तो ठान ली थी कि अब वह किताब नहीं छोड़ेगा। एक तरफ कैमरा चले जा रहा था और दूसरी तरफ मैथ्यू अजीबो–गरीब तरह से फर्श पर निष्क्रिय, किताब में गुम था, बिना अपनी एकाग्रता खोए। उसने कुछ नया खोज निकाला था– कि कुछ पन्नों के बीच में यह कि पन्नों को एक अन्य तरीके से ही पलटा जा सकता था, अपनी उंगलियों को उन छेदों में फंसा कर व जांच रहा था कि हर पन्ना एक सा है या नहीं। अब वह यह नहीं प्रदर्शित कर रहा था कि अगर बच्चे के पास सीखने को कुछ नया न हो, वे ध्यान देने से इंकार कर देंगे, बल्कि यह कि अगर कुछ भी ऐसा हो जो वे सीखना चाहते है, उससे उन्हें रोका नहीं जा सकता।

अंत में, मैथ्यू एक परिचित किताब उठाता है, ''स्क्रेचिंग बुक'' जिसमें फलों व अन्य वस्तुओं के चित्र है जिनकी छपाई नाखुन से कुरेदे जाने पर उचित सुगन्ध आती है। वहां कैमरा चालू था और यहां मैं इस कोशिश में था कि मैथ्यू का ध्यान कहीं और आकर्षित करू क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि दर्शक यह निष्कर्ष निकाले कि हम पढ़ने के लिए किनहीं खुशबुदार किताबों की वकालत कर रहे है। पर मैथ्यू को लगा कि मैं चित्रों के वास्तव में खुशबूदार होने पर आश्वस्त नहीं था। तो वहां फिल्म बन रही थी और यहां वह मुझे जमीन तक झुककर हर एक चित्र को सुंगने के लिए मजबूर कर रहा था। वयस्कों को सबके समक्ष शर्मिंदगी महसूस कराने की स्वाभावित प्रवृत्ति के अलावा वह क्या प्रदर्शित कर रहा था? वह यह दिखा रहा था कि बच्चों के लिए सीखना एक बहुत ही रोमांचक अनुभव है जिसका आनन्द सबको लेना चाहिए वह किसी भी चीज़ को सीखने का संतोष छोड़ना नहीं चाहता था।

निष्कर्ष

रिपोर्ट की शुरूआत में मैंने वे 5 मुद्दें सुचित किए थे जिन पर यह संक्षिप्त शोध प्रकाश डालती है। पहला यह कि जैसे ही बच्चों को लिखित शब्द की अर्थपूर्णता का ज्ञान होता है, वैसे ही पढ़ना शुरू कर देते है। दूसरा यह कि पाठन की जड़े तभी से

देखने को मिल जाती है जब से बच्चे लेख का तात्पर्य समझने लग जाते है, चाहे वे तब तक बहुत से शब्दों की पहचान न कर पाएं। तिसरा यह कि पढ़ने के औपचारिक विधि–विधान इन शुरूआती अवस्थाओं में न ही सिर्फ अनावश्यक है, अपितु रूकावट भी बन सकते है। हमारी दी हुई प्रणालियों का इस्तेमाल तो एक बच्चा तभी कर सकेगा जब वह लिखित शब्द के मायने समझ सकेगा। चौथा, शब्दों का वाक्यों में होना जरूरी नहीं है। जरूरी है उनका सार्थक संदर्भ में होना। पाठक शब्दों में अर्थ डालता है।

अंत में, इस बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिए कि वयस्कों की बहुत अधिक सहायता से बच्चे की सीखने की क्षमता कुचली जाएगी।

अगर बच्चों ने जो सीखना था वह सीख लिया तो वे उस पाठ से उब जाएंगे और किसी और चीज़ से आकर्षित हो जाएंगे। और यही परिणाम तब भी होगा जब गतिविधि या कार्य उनकी समझ और सक्षमता के परे हो। तो हमको ध्यान रखना होगा कि बच्चों के विचलित होने का असल कारण क्या है।

मेरी इस संक्षिप्त केस स्टडी का सार यह है कि बच्चे पढ़ने के बारे में बहुत कुछ खुद ही सीख जाते है, वह भी बिना वयस्कों के हस्ताक्षेप, यहां तक कि बिना उनके जानकारी के भी। पर यहां, अगर वयस्क सीखने के बारे में और सीखना चाहते है तो उन्हें बच्चों की मदद लेनी चाहिए।